


---

sArasvatamantragarbhitaM shrIshAradAstavanam

——  
सारस्वतमन्त्रगर्भितं श्रीशारदास्तवनम्

——  
Document Information



---

Text title : shAradAstavanammantragarbhitam

File name : shAradAstavanammantragarbhitam.itx

Category : devii, sarasvatI, devI, mantra, stava

Location : doc\_devii

Author : jinaprabhasUrvirachitaM

Transliterated by : DPD

Proofread by : DPD

Description/comments : Parishishta 14 of Bhairava Padmavati Kalpa, Jain/Gujarati  
publication, 1993

Latest update : April 14, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



## सारस्वतमन्त्रगर्भितं श्रीशारदास्तवनम्



ॐ नमस्त्रिदशवन्दितक्रमे! सर्वविद्वज्जनपद्मभृङ्गिके! ।  
बुद्धिमान्द्यकदलीदलीक्रियाशस्त्रि! तुभ्यमधिदेवते! गिराम् ॥ १ ॥  
कुर्वते नभसि शोणशोचिषो भारति! क्रमनखांशवस्तव ।  
नम्रनाकिमुकुटांशुमिश्रिता ऐन्द्रकार्मुकपरम्परामिव ॥ २ ॥  
दन्तहीन्दुकमलश्रियो मुखं यैर्व्यलोकि तव देवि! सादरम् ।  
ते विविक्तकवितानिकेतनं के न भारति! भवन्ति भूतले ? ॥ ३ ॥  
श्रीन्द्रमुख्यविबुधार्चितक्रमां ये श्रयन्ति भवतीं तरीमिव ।  
ते जगज्जननि! जाड्यवारिधिं निस्तरन्ति तरसा रसास्पृशः ॥ ४ ॥  
द्रव्यभावतिमिरापनोदिनीं तावकीनवदनेन्दुचन्द्रिकाम् ।  
यस्य लोचनचकोरकद्वयी पीयते भुवि स एव पुण्यभाक् ॥ ५ ॥  
विभ्रदङ्गकमिदं त्वदर्पितस्नेहमन्थरदृशा तरङ्गितम् ।  
वर्णमात्रवदनाक्षमोऽप्यहं स्वं कृतार्थमवयामि निश्चितम् ॥ ६ ॥  
मौक्तिकाक्षवलयान्जकच्छपीपुस्तकाङ्कितकरोपशोभिते ।  
पद्मवासिनि! हिमोज्ज्वलाङ्गि वाग्वादिनि! प्रभव नो भवच्छिदे ॥ ७ ॥  
विश्वविश्वभुवनैकदीपिके! नेमुषां मुषितमोहविप्लवे ।  
भक्तिनिर्भरकवीन्द्रनन्दिते तुभ्यमस्तु गिरिदेवते नमः ॥ ८ ॥

उदारसारस्वतमन्त्रगर्भितं

जिनप्रभाचार्यकृतं पठन्ति ये ।

वाग्देवतायाः स्फुटमेतदष्टकं


स्फुरन्ति तेषा मधुरोज्ज्वला गिरः ॥ ९ ॥


॥ इति श्रीजिनप्रभसूरिविरचितं सारस्वतमन्त्रगर्भितं

श्रीशारदास्तवनं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by DPD

---

——  
*sArasvatamantragarbhitaM shrIshAradAstavanam*  
pdf was typeset on February 2, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

